



P.V.G.'s
Mukhtangan English School & Jr. College,
44, Vidyanagari, Parvati, Pune - 411009.

Terminal Examination - (2025-26)
Standard - X

Subject : Hindi [Composite]

Marks : 40

Date : 08/10/2025

Time : 8.00am. to 10.00am.

सूचनाएँ -

- 1) सूचनाओं के अनुसार गद्य, पद्य तथा व्याकरण की आकलन कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है ।
- 2) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें ।
- 3) रचना विभाग तथा व्याकरण विभाग में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है ।
- 4) शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है ।

विभाग १ - गद्य : 12 अंक

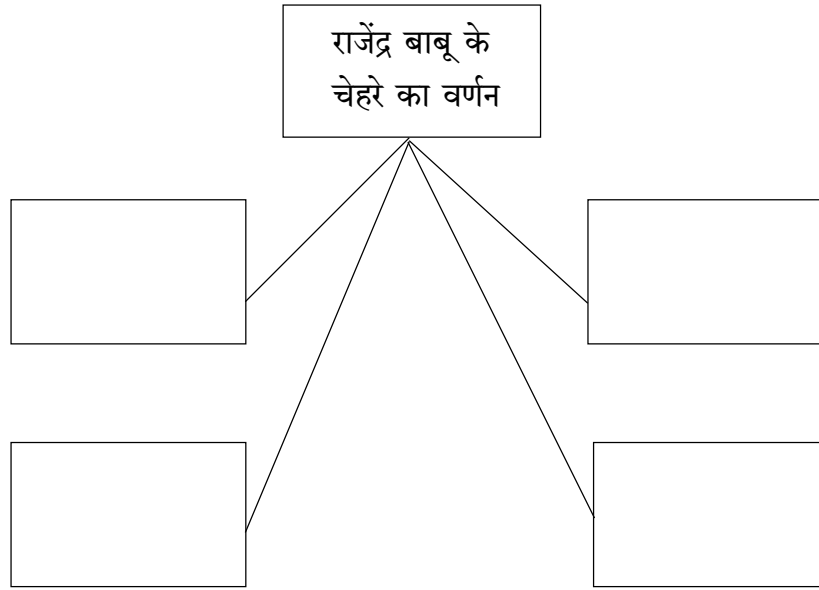
कृति 1अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी टुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल ओंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, बड़ी-बड़ी ग्रामीणों जैसी मूँछें जो ऊपर के ओंठ को ही नहीं ढँक लेती थीं, नीचे के ओंठ पर भी रोमिल आवरण डाले हुए थीं । हाथ, पैर, शरीर सबमें लंबाई की ऐसी विशेषता थी जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी ।

उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी । खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली । मोटे, खुरदुरे, काले बंद गले के कोट में ऊपर का भाग, बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का बटनों से बंद था । सर्दी के दिनों के कारण पैरों में मोजे जूते तो थे, परंतु कोट और धोती के समान उनमें भी विचित्र स्वच्छंदतावाद था । मिट्टी की परत से न जूतों के रंग का पता चलता था, न रूप का । गांधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी । उसकी आगे की नोक बाईं भौंह पर खिसक आई थी और टोपी की कोर माथे पर पट्टी की तरह लिपटी हुई थी ।

1) आकृति पूर्ण कीजिए.

[2]



2) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

[1]

i) भृकुटी =

ह्र

ii) मुख =

ह्र

3) परिच्छेद में आए दो प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढकर लिखिए ।

[1]

i)

ii)

ह्रह्र

4) 'सादा जीवन, उच्च विचार' इस विषय पर अपने विचार ६-८ पंक्तियों में लिखिए ।

[2]

कृति 13) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

एक बार एक बहुरूपिये ने साधु का रूप बनाया - सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भस्म, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी । उसके रूप में कहीं कोई कसर नहीं थी और वह संसारत्यागी साधु ही लगता था । उसने नगर से बाहर बड़े-से पेड़ के नीचे अपनी झोंपड़ी तैयार की, बगीचा लगाया और बैठकर तपस्या करने लगा । धीरे-धीरे सारे नगर में यह समाचार फैलने लगा कि बाहर एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा ने आकर डेरा लगाया है । लोग उसके दर्शनों को अपने लगे और धीरे-धीरे चारों तरफ साधु का यश फैल गया । सारे दिन उसके यहाँ भीड़ लगी रहती थी । लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है और उनके आशीर्वाद से संसार के बड़े से बड़े कष्ट दूर हो जाते हैं । अपनी इस कीर्ति से साधु को कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता और मन-ही-मन वह अपनी सफलता पर मुसकराया करता ।

नगर के सबसे बड़े सेठ से जब किसी ने साधु का जिक्र किया, तो वह अविश्वास से हँस पड़ा। बोला, “ऐसे ढोंगी जाने यहाँ कितने आते रहते हैं!” और वह अपने कारोबार में लग गया। साधु का नाम चारों ओर फैलता जा रहा था। साधु भी कभी-कभी सोचता कि अब फिर बहुरूपिया जीवन में लौटने में क्या रखा है, क्यों न इसी जीवन में अपनी जिंदगी लगा दी जाए। फिर उसका मन धिक्कारने लगता कि वह जिंदगी भर साधु बना रहा, तो अपने असली पेशे के साथ बेईमानी करेगा। इसी सोच-विचार में उसके दिन निकलने लगे।

1) उत्तर लिखिए। [2]

1) बहुरूपिये का साधु रूप ऐसा था :-

i) माथे पर ह

ii) सिर पर ह

iii) नंगे शरीर पर

iv) कमर में ह

2) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। [1]

i) झोपड़ी × ह

ii) सफल × ह

3) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए। [1]

i) तपस्या = ह

ii) महात्मा = ह

4) ‘हमे अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार होना चाहिए’ इस विषय पर अपने विचार ६-८ पंक्तियों में लिखिए। [2]

विभाग २ – पद्य 8 अंक

कृति 2)अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं,
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं,
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं,
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।

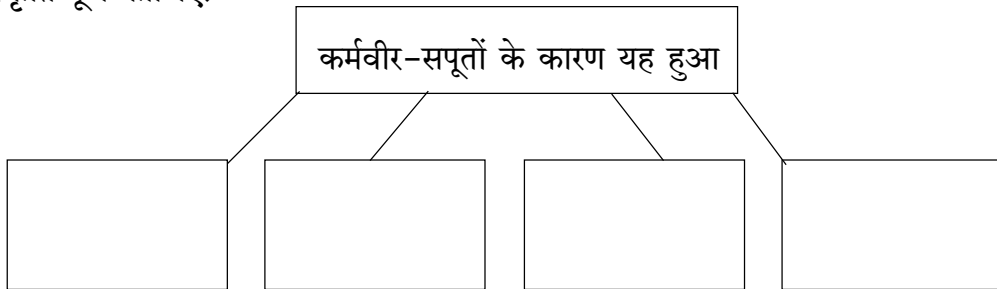
काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते,
सामना करके, नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते,
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते,
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते ।

कार्य थल को वे कभी नहीं पूछते 'वह है कहाँ',
कर दिखाते हैं असंभव को वही संभव यहाँ,
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ,
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ ।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले,
बुद्धि-विद्या, धन-विभव के हैं जहाँ डेरे डले,
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले,
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले ।

1) आकृति पूर्ण कीजिए.

[2]



2) पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का सरल अर्थ ६-८ पंक्तियों में लिखिए ।

[2]

कृति 2)अ)निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल-मंद-सुगंध पवन हर लेता श्रम है ।
षडक्रतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है ।

शुचि सुधा सींचता रात में, तुझपर चंद्र प्रकाश है ।

हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है ॥

सुरभित, सुंदर, सुखद सुमन तुझपर खिलते हैं,
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपन फल मिलते हैं ।

औषधियाँ हैं प्राप्त एक-से-एक निराली,
 खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नोंवाली ।
 जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं ।
 हे मातृभूमि वसुधा-धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं ॥
 क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
 सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है ।
 विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है,
 भयनिवारिणी, शांतिकारिणी, सुखकर्त्री है ।
 हे शरणदायिनी देवी तू, करती सबका त्राण है ।
 हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी, तू प्राण है ॥

1) उचित जोड़ियाँ लगाइए :-

[2]

	‘अ’	उत्तर	‘ब’
i)	निर्मल		दृश्य
ii)	शीतल		मखमल
iii)	षड्क्रतु		पवन
iv)	हरियाली		नीर

2) पद्यांश की अंतिम छह पंक्तियों का सरल अर्थ ६-८ पंक्तियों में लिखिए ।

[2]

विभाग ३ – भाषा अध्ययन (व्याकरण) 8 अंक

कृति 3 सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) निम्नलिखित शब्दों में मानक वर्तनी के अनुसार सही शब्द छाँटकर लिखिए ।

[1]

अ) आगतुंक / आगतूक / अगतुंक =

आ) युवावस्ता / यूवावस्था / युवावस्था =

2) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

[1]

i) के ऊपर

ii) अथवा

3) कृति पूर्ण कीजिए –

[1]

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि भेद
१) सूर्यास्त	 + ... अथवा	
२)	दु : साहस	

4) अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए ।

[1]

(टीस उठना, मुँह फुलाना)

ह

उमा आज सुबह से ही नाराज है ।

अथवा

निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर उचित वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

मन मारना –

ह

5) कालभेद पहचानना तथा काल परिवर्तन ।

i) निम्नलिखित वाक्य का कालभेद पहचानिए ।

[1]

गाँववाले भी खूब परिश्रम कर रहे थे ।

ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए ।

[1]

1) खोया हुआ आदमी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो जाता है । (पूर्ण भूतकाल)

2) युवती होते हुए भी वे सीधी खड़ी नहीं हो पाती थीं । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

6) वाक्य के भेद तथा वाक्य परिवर्तन ।

i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए ।

[1]

गाँव के किनारे कुछ घर दलितों के थे और कुछ मुसलमानों के ।

ii) निम्नलिखित वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचनानुसार परिवर्तन कीजिए।

[1]

राकेश अध्ययन करता है । (आज्ञार्थक वाक्य)

विभाग ४ – रचना विभाग (उपयोजित लेखन) – 12 अंक

सूचना – आवश्यकतानुसार परिच्छेदों में लेखन अपेक्षित है।

कृति 4) सूचनाओं के अनुसार लिखिए।

अ) पत्रलेखन

[4]

1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्रलेखन कीजिए।

७ किशोर कुंज, गांधी चौक, जलगाँव – ४२५००२ के रहनेवाले अशोक गोखले ने नॅशनल स्टोर मोहम्मद अली रोड, मुंबई – ४००००३ से एक लैपटॉप खरीदा था, किंतु वह ठीक से काम नहीं कर रहा है।

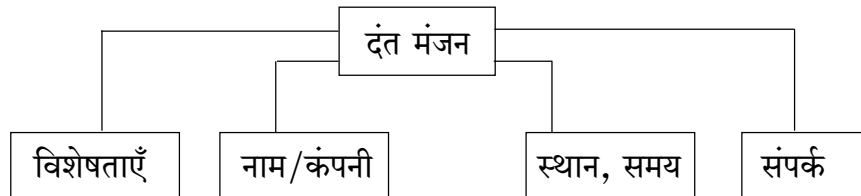
अशोक गोखले उस कंपनी के मैनेजर को पत्र लिखता है।

अथवा

चेतना सोनवणे / चेतन सोनवणे, आजाद नगर चिंचवड, पुणे ४११०१२ से अपनी सहेली / मित्र गौरव / गौरवी देशपांडे, आहलाद नगर, बीड – ४३११२२ को बहन की शादी में आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखती / लिखता है।

2) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

[4]



अथवा

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हो। (केवल प्रश्न ही बनाइए)।

एक बार भगवान बुद्ध का एक प्रचारक घूम रहा था। उसे एक भिखारी मिला। वह प्रचारक उसे धर्म का उपदेश देने लगा। उस भिखारी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उसमें उसका मन ही नहीं लगता था। प्रचारक नाराज हुआ। वह बुद्ध के पास जाकर बोला, 'वहाँ एक भिखारी बैठा है, मैं उसे इतने अच्छे-अच्छे सिखावन दे रहा था, तो भी वह सुनता ही नहीं।' बुद्ध ने कहा, 'उसे मेरे पास लाओ।' यह प्रचारक उसे बुद्ध के पास ले गया। भगवान बुद्ध ने उसकी दशा देखी। उन्होंने ताड़ लिया कि भिखारी तीन-चार दिनों से भूखा है। उन्होंने उसे पेट भरकर खिलाया और

कहा, 'अब जाओ।' प्रचारक ने कहा, "आपने उसे खिला तो दिया, लेकिन उपदेश कुछ भी नहीं दिया।" भगवान बुद्ध ने कहा, "आज उसके लिए अन्न ही उपदेश था। आज उसे अन्न की सबसे ज्यादा जरूरत थी। वह उसे पहले देना चाहिए। अगर वह जिएगा, तो कल सुनेगा।"

आ) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए। [4]

- 1) जल ही जीवन।
- 2) यदि मैं पंछी होता.....

